

Vol 6 Issue 4 Jan 2017

ISSN No : 2249-894X

---

*Monthly Multidisciplinary  
Research Journal*

*Review Of  
Research Journal*

Chief Editors

---

**Ashok Yakkaldevi**  
A R Burla College, India

**Ecaterina Patrascu**  
Spiru Haret University, Bucharest

**Kamani Perera**  
Regional Centre For Strategic Studies,  
Sri Lanka

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

### Regional Editor

Manichander Thammishetty  
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

### Advisory Board

Kamani Perera Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka	Delia Serbescu Spiru Haret University, Bucharest, Romania	Mabel Miao Center for China and Globalization, China
Ecaterina Patrascu Spiru Haret University, Bucharest	Xiaohua Yang University of San Francisco, San Francisco	Ruth Wolf University Walla, Israel
Fabricio Moraes de Almeida Federal University of Rondonia, Brazil	Karina Xavier Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA	Jie Hao University of Sydney, Australia
Anna Maria Constantinovici AL. I. Cuza University, Romania	May Hongmei Gao Kennesaw State University, USA	Pei-Shan Kao Andrea University of Essex, United Kingdom
Romona Mihaila Spiru Haret University, Romania	Marc Fetscherin Rollins College, USA	Loredana Bosca Spiru Haret University, Romania
	Liu Chen Beijing Foreign Studies University, China	Ilie Pintea Spiru Haret University, Romania
Mahdi Moharrampour Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran	Nimita Khanna Director, Isara Institute of Management, New Delhi	Govind P. Shinde Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai
Titus Pop PhD, Partium Christian University, Oradea, Romania	Salve R. N. Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur	Sonal Singh Vikram University, Ujjain
J. K. VIJAYAKUMAR King Abdullah University of Science & Technology, Saudi Arabia.	P. Malyadri Government Degree College, Tandur, A.P.	Jayashree Patil-Dake MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC), Kachiguda, Hyderabad
George - Calin SERITAN Postdoctoral Researcher Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi	S. D. Sindkhedkar PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [ M.S. ]	Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary Director, Hyderabad AP India.
REZA KAFIPOUR Shiraz University of Medical Sciences Shiraz, Iran	Anurag Misra DBS College, Kanpur	AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI, TN
Rajendra Shendge Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur	C. D. Balaji Panimalar Engineering College, Chennai	V.MAHALAKSHMI Dean, Panimalar Engineering College
	Bhavana vivek patole PhD, Elphinstone college mumbai-32	S.KANNAN Ph.D , Annamalai University
	Awadhesh Kumar Shirotriya Secretary, Play India Play (Trust), Meerut (U.P.)	Kanwar Dinesh Singh Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....



## संगीत का मानव जीवन पर सकारात्मक प्रभाव

डॉ.मीता कौशल  
रीडर-संगीत विभाग

### प्रस्तावना :

कला मानव संस्कृतिक की उपज है। मनुष्य ने निसर्ग से युद्ध करते हुए अपने और जन-मन के स्वास्थ्य एवं संस्कार हेतु जिस सौन्दर्य बोध को अर्जित किया है उसको कला की संज्ञान से अभिहित किया गया है।

भारत में कलाओं की गणना करते हुए किसीने कलाओं की संख्या बहत्तर, किसी ने चौंसठ तथा किसी ने सोलह कलाएँ बताई हैं। इसी आधार पर भगवान राम को बारह तथा श्री कृष्ण को सोलह कलाओं का अवसर कहा गया है। ऐसा लगता है कि ये कलाएँ समय और आवश्यकता के अनुसार प्रयुक्त होती रही हैं। जहाँ तक ललित कलाओं का सम्बन्ध है, इन्हें पाँच रूपों में देखा गया है। ये कलाएँ लालित्य, लास्य और लोक-रंजन के साथ-साथ कलाकार के स्वयं के रंजन से जुड़ी हुई हैं। ये ललित कलाएँ पाँच हैं- 1. वास्तु कला 2. मूर्ति कला 3. चित्रकला 4. काव्य कला 5. संगीत कला।

उपर्युक्त कम नीचे से ऊपर की ओर है यानि वास्तुकला सबसे नीचे पायदान पर और संगीत कला सबसे ऊपर के पायदान पर स्थित है। साहित्य समाचोचक डॉ० श्याम सुन्दरदास ने यह कम ललित कलाओं का रखा है और इसका आधार बताते हुए कहा है कि जिस कला में जितने अधिक उपकरण अथवा लम्बाई, चौड़ाई, मोटाई, आकार इत्यादि का प्रयोग



होता है, वह कला उतने ही नीचे स्तर पर है और इनका प्रयोग जितना कम होता जाता है, उतना ही कला श्रेष्ठ होती जाती है।

स्वर, लय, गति, श्रवण आदि के कारण ललित कलाओं में संगीत का स्थान सर्वोच्च माना गया है, क्योंकि इसमें अन्य कलाओं की अपेक्षा अमूर्तता और सूक्ष्मता अधिक है तथा उपकरणों की संख्या भी कम है। संगीत के अलावा अन्य ललित कलाएँ श्री अधिकांशतः दूसरों का जन-मन रंजन करती हैं, इसका तात्पर्य यह नहीं कि कलाकार हृदयहीन रहकर कलाकृति सामने ला सकता है। कव्य तथा संगीतकला में तो हृदय और मानसिक पक्ष ही अधिक बलवान रहता है। संगीत में जब तक कलाकार को स्वयं आनन्द की अनुभूति नहीं होगी, तब तक दूसरों को भी आनन्द नहीं दे पायेगा। इसीलिए कहा गया है कि गायन, वादन और नृत्य का प्रदर्शन पूरी एकाग्रता के साथ किया जाना चाहिए। 'संगीत रत्नकार' के अनुसार गीता, वाद्य तथा नृत्त संगीत मुख्यतः। अर्थात् गीत, वाद्य तथा नृत्य तीनों ही संगीत कला के अर्न्त आते हैं। संगीत के इस त्रिवेणी संगम का विस्तार असीम, अछोर तथा अविनिश्चर है। मानव जीवन ही नहीं अपितु सम्पूर्ण सृष्टि और प्रकृति के कण-कण में संगीत व्याप्त है। संगीत कला का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक एवं विस्तृत माना जाता है। संगीत कला के सौन्दर्याकर्षण से चेतन तथा अचेतन दोनों प्रकार के प्राणी मुग्ध हो जाते हैं, किन्तु वास्तु, चित्र, मुर्ति आदि कलाओं में केवल चेतन प्राणी आकृष्ट होता है। काव्य कला की अनुभूति मनुष्य मात्र की कर सकता है, किन्तु पशु-पक्षियों पर उनका प्रभाव पड़ता ही नहीं है। संगीत ही ऐसी कला है, जिसको सुनकर मनुष्य तथा जन्तु तो

मुग्ध होते ही हैं, पेड़, पौधे तथा लताओं पर भी हरियाली छा जाती है। संगीत कला अनेक रोगों की निवृत्ति का एक मात्र साध है। (1) हॉलेण्ड के एक प्रसिद्ध संगीतज्ञ ने अपने वादन से एक खतरनाक पागल को इतना मन्त्र मुग्ध कर दिया कि वह उसीके स्वर में स्वर मिलाकर गाले लगा तथा कई बार ऐसा करने पर उसका पागलपन जाता रहा। (2) स्वीडन की गौशालाओं में गया दुहते समय संगीत गूँजते रहने से गया अधिक दूध देने लगी। यह सब संगीत कला की उत्कृष्टता का ही प्रतीक है।

संगीत मानवता का पाठ पढ़ाता है। आसभ्य को सभ्य तथा संकीर्ण हृदय को विश्व बन्धुत्व का संदेश देता है। संगीत समीर के शीतल झोंके हृदय-कलुप्ता, विकृत, वासनाओं, संकीर्णता तथा तासमी एवं असुरी भावनाओं का समूल अच्छेदन कर आत्मा को निश्चल तथा पवित्र बना देते हैं।

ऐसी महत्वपूर्ण संगीत कला, जो मनुष्य को एकान्तिकला, आनन्द और निमग्नता की ओर ले जाती है, निश्चित रूप से मानसिक शान्ति प्रदान करने वाली होती है। निमग्नता की अवस्था में जो आनन्द की अनुभूति होती है, वह श्रम का परिहार करने वाली तथा आगे कार्यकुशलता को बढ़ाने वाली बन जाती है। यही कारण है कि अनेक बार श्रमिकों को अथवा दूर मंजिल को जाने वाले पथिकों को हम स्वयं गाते हुए या विज्ञान के उपहारों के परिणाम स्वयं संगीत सुनते हुए देख सकते हैं। यह बाद स्पष्ट करती है कि संगीत का सहारा लेकर मनुष्य मानसिक शान्ति प्राप्त करने का प्रयास करता है और इस प्रयास में उसे मानसिक शान्ति की उपलब्धि भी होती है। तल्लीनता और आनन्द प्राप्ति की दिशा में उन्मुख करने वाली यह संगीत कला निःसन्देह मनुष्य की कार्यकुशलता, योग्यता और सामर्थ्य को बढ़ाने वाली सिद्ध होती है। ऐसी दशा में संगीत केवल विषय के रूप में ही नहीं अपितु एक उद्यम के रूप में अपनाया जाए तो निःसन्देह यह मानव समाज को अनेक रोगों, विवादों, तनावों, थकार और श्रम के भास से मुक्त कर सकेगा लेकिन इसके लिए शोध की आवश्यकता है।

राग-रागनियों के स्वभाव समय और स्वरूप के विषय में संगीत शास्त्र में बहुत कुछ गया है। यदि हम इसका उपयोग करते हुए औद्योगिक क्षेत्र में संगीत का सहयोग लें तो निःसन्देह मनुष्य की कार्यकुशलता, योग्यता और सामर्थ्य में वृद्धि रहेगी। इस दिशा में विज्ञानवेत्ता भी संगीत के विभिन्न पक्षों को लेकर प्रयोग करने लगे हैं और वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि संगीत केवल ललित कला ही नहीं अपितु उपयोगी कला भी है। उपयोगी कला उद्यमशीलता से आवश्यक रूप से जुड़ जाती है और मानव जाति के सुख साधनों की वृद्धि में सहयोग करती है। अतः संगीत कला को अब उद्यमशीलता से अधिक से अधिक जोड़ने का समय आ गया है।

# Publish Research Article

## International Level Multidisciplinary Research Journal

### For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper, Summary of Research Project, Theses, Books and Books Review for publication, you will be pleased to know that our journals are

### Associated and Indexed, India

- ★ Directory Of Research Journal Indexing
- ★ International Scientific Journal Consortium Scientific
- ★ OPEN J-GATE

### Associated and Indexed, USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Database
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal  
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005, Maharashtra  
Contact-9595359435  
E-Mail-[ayisrj@yahoo.in](mailto:ayisrj@yahoo.in)/[ayisrj2011@gmail.com](mailto:ayisrj2011@gmail.com)  
Website : <http://oldror.lbp.world/>